ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

रेखा दुग्गल की कविताएं-

1 ये क्या हो रहा है

“जवान मर रहा है, किसान रो रहा है,
हमारे रक्षकों और अन्नदाताओं का ये हाल हो रहा है,
ऐ मेरे देश ये क्या हो रहा है,
महंगाई बढ़ रही है, जनता लुट रही है,
भूख के मारे गरीब जनता बिलख रही है,
ऐ मेरे देश ये क्या हो रहा है,
नेता पनप रहे हैं, जनता को लूट रहे हैं,
लोगों के पैसों पर स्वार्थ की रोटियां सेंक रहे हैं,
ऐ मेरे देश ये क्या हो रहा है,
विद्यार्थी भटक रहें हैं, एडमिशन को तरस रहे हैं,
पढ़े लिखे बेरोज़गार नौकरी के लिए भटक रहे हैं,
ऐ मेरे देश ये क्या हो रहा है,
महिलाएं लुट रही हैं,घरों में छिप रही है,
दहेज की भी खातिर घर घर में मर रही है,
ऐ मेरे देश ये क्या हो रहा है,
नवजात बच्चियां मर रही हैं, मूर्तियाँ पुज रही हैं,
धर्म के नाम पर लोगों में नफ़रत पनप रही हैं,
ऐ मेरे देश ये क्या हो रहा है,
ये क्या हो रहा है ...।”

2 दिल करता है आज

"दिल करता है आज आसमां में उड़ जाऊँ,
न देखूँ किसी को,
न करूँ किसी की परवाह,
बस खुद ही में मैं समाऊँ,
दिल करता है आज..
क्या रखा है इन सब बंधनों में,
क्यूँ इनमें बांध मैं खुद को सताऊँ,
तोड़ फिर इन सभी बंधनों को,
बस उन्मुक्त कहीं दूर निकल जाऊँ,
दिल करता है आज..
यूं तो रोका मैंने खुद को काफ़ी बार,
दिल को भी समझाया बार बार,
लेकिन फिर भी न माना ये,
अब लगता है मैं भी इसके साथ हो जाऊँ,
दिल करता है आज..
काफ़ी अरसे बाद हुआ है ऐसा भी,
मौका भी है और दस्तूर हुआ है ऐसा भी,
फिर क्यूँ मैं सोच सोच भरमाऊँ,
और आज क्यूँ न इस मौके का लाभ उठाऊँ,
दिल करता है आज आसमां में उड़ जाऊँ..!!"

रेखा
पीएच डी. शोधार्थी हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय
मोबाइल न. -9717548597

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)